THE ESSENCE OF THE GOSPEL.

मङ्गल समाचारका तत्व ज्ञान ॥

प्रभु यिशु खीष्ट जगत् त्राता ईश्वरके तेजका प्रकाश और उसके भावका यथार्थीय जो अठारह् सौ चौतीस बरस ऊए जगतके प्रायश्चित्य कारण अवतार धारके आत्म बलिदान होके मरा और जीउठा उस ईश्वरावतारने स्वर्गको गमन करणेसे पहिले अपने भगतगणोंको आज्ञा करी कि वे सारे जगतमें और सर्व्व लोगोंके और भाषीयोंके बीच उन्हके मुक्तार्थ अपने बिषयके मङ्गल समाचारको प्रचारे सो उसके दास प्रचारते प्रचारतें इस देशतक आई हैं तो चाहिये कि सब लोग छोटे और बडे उस मङ्गल समाचारके बिषयको ध्यान लगाके सुने क्योंकि इस कर्म्म हीन समयमें कर्म्मोंसे मुक्त नही पर ईश्वरावतारकी भक्ती और उपासनासे है ॥

जब प्रभुने अपने दास पाउलको आन्यदेशीयोंके पास भेजाथा मङ्गल समाचार प्रचारणे तब प्रचारनेकायह अभिप्राय बताया था कि मङ्गल समाचारके तत्वज्ञानसे आन्यदेशीयोंकी आंखे खुली जावें और वे अंधेरेसे उजियालेको और शयतानसे ईश्वरको ओड फिराए जावें जिस्से उन्हके पापोंका मोचन होवे और यिशु नामकी भक्तीसे जो जो पवित्र ऊए हैं उन्हमें वे अधिकार पावें ॥ इस लिये पाउल आनन्द रूपसे कहता है कि मैं खीष्टके मङ्गल समाचारसे

[1500 Copies—Serampore, July, 1834.]

LIBRARY OF PRINCETON
MAR 14 1913
THEOLOGICAL SEMINARY

लज्जि नही ऊं क्योंकि सो हरेक भक्तिमानोंको मुक्ततक पऊचानेकोईश्वरकी शक्त है और इस मङ्गल समाचारमें ईश्वरका धर्म्म भक्तोंकी राहसे प्रकाश है जैसा लिखा है यथार्थ लोग भक्तीसे जीयेगे और इस मङ्गल समाचारसें ईश्वरका कोपभी मनुष्योंकी सारी अधर्म्मीयोंपर प्रगट किया गया है ॥ क्योंकि जगतके सब लोग पापके अधीन हैं जैसा लिखा है साधु कोई नही एकभी नही समझने वाला कोई नहीं ईश्वरका ढुंढनेवाला कोई नही सब गुम राह ऊए हैं वे सबके सब निकम्मे ऊए हैं नेक काम करने वाला कोई नही एकभी नही उन्हका गला खुला कबर है उन्हकी जीभसे उन्होंने छल किया ह सापोंका जहर उन्ह के ओंठोंतले है कोसना और कडवी बातोंसे उन्हका मुंह भरा है उन्हके पैर खूनरेजोको दौडते हैं नाश करन और बिगाडना उन्हकेचलनमेंहैं और कुशलकी राह उन्होंने नही जाना ईश्वरका जरा डर उन्हकी आंखोंके सामने नही है ॥ इसीसे सबका मुह बंद है और सारा जगत ईश्वरके आगे अपराधी है और कर्म्म शास्त्रसे कोई प्राणी ईश्वरके आगे निर्दोषी नही हो सकता है क्योंकि कर्म्म शास्त्रसे पापका ज्ञान होता है पर कर्म शास्त्र बिना ईश्वरका जो धर्म प्रकाश ऊआ है जिसकी धर्मग्रंथ और आचार्य्यने साक्षी दीई है सो धर्म यिशु खीष्टपर भक्ति करनेसे प्राप्त होता है क्योंकि सभोंके पापी होनेसे ईश्वर ने यिशुके लऊको प्रायश्चित्य निमित्त ठहराया है कि ईश्वर की क्षमासे उस लऊके गुणसे पिछले पापोंका मोचन होवे और ईश्वर यथार्थ होकेभी यिशुपर भक्तिकरनेवालोंको

निर्दोषी रूपसे गिणे॥ आबरहामभी भक्तीसे निर्दोषी ठहरा कर्मोंसे नही क्योंकि धर्मग्रंथ कहताहै आबरहाम ने ईश्वरकी भक्ती करी और सो उसके लिये धर्म करके गिणा गया अब देखिये कि अगर कोई निहनत करता है उसकी मजूरीको दान नही कहता है पर वह दैन गिणा जाता है लेकिन जो कर्म नही करता है पर अधर्मीके निर्दोषी करनेवालेकी भक्ति करताहै उसकी भक्ती धर्म करके गिणी जाती है॥ जैसा दाउदनेभी उस मनुष्यको धन्य कहके वर्नन किया है जिसको ईश्वर कर्मोंके बिना धर्मी गिणता है कि धन्य वे जिसके पाप मोचन हुए हैं और खोंटाई ढप गई धन्य वह मनुष्य जिसको ईश्वर पापका दोष नही लगता है॥ आबरहामकी भक्ती जो उसके लिये धर्म करके गिणा गया था यह केवल उसके वास्ते नही लिखा गया पर हमारे वास्तेभी और हमारी भक्ती हमारे हकमें धर्म करके गिणा जायगा जो हम उसपर विश्वास करे जिसने हमारे प्रभु यिशुको मुओंसे उठाया जो हमारे दोषोंके कारण सौंपा गया था और हमारे निर्दोषी होनेके कारण फेर जिलाया गया था॥ इस लिये कि जब हम सामर्थहीन थे उसी समयमें खीष्ट अधर्मीयोंके लिये मूआ और इससे ईश्वरने हमारी ओड अपना प्रेम प्रकाशा कि हम दुशमन होते हुए खीष्ट हमारे वास्ते मूआ तौ उसके लहूसे निर्दोषी किये हुये होके हम क्यों न उसके वसिलेसे मुक्त पावेंगे क्योंकि जौ हम दुशमन होते हुए ईश्वरके पुत्रके मरणके कारण

से उस्से मिलाय गय तौ मिलाप गयपर हम उसके जीवन से केता ज्यादा मुक्त पावेंगे सिवाय इसके हम अपने प्रभु यिशु खीष्टके प्रायश्चित्यके वसीलेसे ईश्वरमें आनन्दभी कर ते हैं ॥ क्योंकि जैसा एकके पाप करणेसे मरण जगतमें समाया और सभोंपर चल गया क्योंकि सभोंने पाप किया वैसाही एकके धर्म्मके गुणसे जीवनरूप निर्दोषी होनेकी क्षमा सभोंपर झई ॥ इस लिये कि जैसा एक मनुष्यके आज्ञा लंघनसे बज़तरे पापी किये गय वेसेही एकके आज्ञा मान्नेसे बज़तेरे धर्म्मी किय जांगे ॥ कि जैसे पापने मरण तक राज्य किया है वैसे क्षमा धर्म्मको राहसे हमारे प्रभु यिशु खीष्टके वसीलेसे अनन्त जीवनतक राज्य करे ॥ क्योंकि पापका फल मरण है परंतु ईश्वरको दान अनन्त जीवन है हमारे प्रभु यिशु खीष्टके वसीलेसे ॥ हाय दुःखी मनुष्य जो मैं ज़ं कौन मुझे इस मरणकी देहसे उद्धार करेगा शुकुर ईश्वरका हमारे प्रभु यिशु खीष्ट करेगा ॥ जिसने हमसे अपने बेटेको रोक नही रखा परु हम सभोंके वास्ते उसे सोंप दिया कि बलिदान होवे वह उसके साथ हमको कैसे सब कुछभी योंहो न देगा ॥ भक्तीसे जो धर्म प्राप्त है वह यों कहता है कि अपने जीव में मत कह कि स्वर्गमें कोन चढ जायगा अर्थात खीष्टको उतारने अथवा गहरेमें कोन उतरेगा अर्थात खीष्टको मरणसे फेर उठा लाने ॥ परु बात यह है कि जो तू अपने मुंहसे प्रभु यिशुको कबूलेगा और अपने जीवसे बिस्वास करेगा कि ईश्वरने उसको मूओंसे उठाया है तू मुक्त पावेगा ॥ क्योंकि धर्म्मग्रंथ कहता है कि जो कोई

उसपर विश्वास करेगा शर्म्मिन्दा नही होवेगा क्योंकि देश देशके लोगोंमें कुछ फरक नही वह एकही प्रभु सभों पर जो उसको प्रार्थना करतेहैं दयारूपसे धनी है और जो कोई प्रभुके नामकी प्रार्थना करेगा मुक्त पावेगा॥ और इसी लिये खीष्ट मूत्र्या और जीभी उठा कि वह मुर्दों और जिंदोंका प्रभु होवे और सर्व्व देशोंको और हम सब कोभी उसके बिचारके आसनके आगे खडे होने पडेंगे क्योंकि लिखा है कि प्रभु कहता है यथा मैं जीवुं हरेकके घुटने मेरे आगे टेके जांगे और हरेककी जीभ ईश्वरको कबूलेगी॥ जो मङ्गल समाचारका बिषय गुप्त है तो उन्हसे है जिन्हको नाश होना है जो खीष्ट मरणको भक्ती नही करते हैं जिन्हके मनको शैतानने अंधेरा कर रखा है ऐसा न हो ईश्वरका सादृश्य जो खीष्ट है उसके तेजोमय मङ्गल समाचारकी ज्योति उन्हमें प्रकाश होवे॥ मङ्गल समाचार ईश्वरसे मिलानेकी सेवा है अर्थात ईश्वर जो है वह खीष्टमें होके जगत लोगके पाप उन्हपर नही धरके जगतको अपने साथ मिला रहाथा और ईश्वरने यह सेवा अपने दासोंके हाथ सापा है सो अब हम खीष्टकी ओडसे वकील है और ईश्वर हमारी मारफतसे विन्ती करता है इसलिये हम खीष्टके एवजमें तुम्हारी बिन्ती करतें मैं तुम्ह ईश्वरसे मिल जाव इसलिये कि जो धार्म्मीक पुरुष कुछ पाप नजानता था उसको ईश्वरने हमारे लिये पापका प्रायश्चित्य ठहराया कि हम उसके कारणसे ईश्वरके धर्मी बने॥ देखो हमारे प्रभु यिशु खीष्टकी कैसी

कृपा थी कि जद्यपि वह धनी था तौभी वह हम पापी येांके लिये कंगाल बना कि हम उसकी अधीनताईके कारणसे धनी होवें ॥ ईश्वर जो कृपारूप धनसे धनी है उसने अपने बडे प्रेमसे हमें प्रेम किया है और जब हम पापेांमें मूए पडे थे हमे खीष्टके साथ जिलाया और उठाया और स्वर्गी स्थानेांमें उसके साथ बैठाया ॥ हे नारी मुक्त कृपासे और भक्ती करनेसे है और सो भी अपने कियेसे नही ईश्वरका प्रसाद है कर्म्म करके मुक्त नही है ऐसा न हो कोई अहंकार करे ॥ अन्य मतके लेाग जो खीष्टसे परे है वे जगतमें निरास और ईश्वर रहित है पर वे अपने कल्पित मतेां और पापेांसे जैसाही दूर रहे खीष्टमें भक्ती करके वे उसके लहूके गुणसे निकट लिवाए जाते हैं क्योंकि वह उन्हके मिलापका कारण और बीचवाल है ॥ ईश्वरने हमको क्रोध भेागनेको नही मुकरर किया पर मुक्त पानेको हमारे प्रभु यिशु खीष्टके वसीलेसे जो हमारे लिये मूआ कि चाहे हम जागेंया सेावें हम उसके साथ जीयें ॥ यह सच्ची वात है और सभेांसे कवूली जानेके लायक है कि खीष्ट यिशु पापीयेांको वचानेको जगतमें आया हां अधमसे अधम पापीयांका ॥ हमारे उस ईश्वर तारककी यह मरजी है कि सब लेाग मुक्त ज्ञान पावें और मुक्तको पहुंचे क्योंकि एक ईश्वर और ईश्वर और मनुष्येांके दरमियान एक बीच वाला है वही देहधारी प्रभु यिशु खीष्ट जिसने सभेांके निस्तारके वास्ते आपेको दिया है और सो पूरे समयमें प्रत्यक्ष होगा ॥ हमारे तारक यिशु खीष्टने मरणको मेट

दिया है और जीवन और अमृत्यनको प्रगट किया है मङ्गल समाचारके वसीलेसे ॥ उसने आपेको हमारे वास्ते दे दिया ताकि हमको सब पापसे निस्तारे और अपने लिये एक खास लोगको पवित्र करे ॥ हम आपभी कुछ काल अज्ञान भलाए हुए रंग रंगकी कामना और औरोंके बदनें वैर और डाहमें दिन काटतेआप घिनाए हुए औरोंको घिनाते थे पर जब हमारे मुक्त करणहारे ईश्वरकी मेहरबानी और प्रीत मनुष्योंकी ओड दिखाई दीई तब उसने हमारे धर्म कर्मोंसे नही पर अपनी छपा नुसार नय जन्मकी धुलाईसे और धर्मात्माके नय करनेसे हमको हमारे त्राता यिशु खीष्टके वसीलेसे बहुरूप मुक्त किया जिस्से हम छपानुसार निर्दोषी किये हुए होके अनन्त जीवनकी आशके अधिकारी हुए हैं ॥ ईश्वर जो नाना समयमें और नाना प्रकारसे अगलोंसे आचार्योंकीमारफत कहा किया वह इन्ह पिछले दिनोंमें अपने पुत्र की मारफत हमसे बोला हैं जिसको उसने सब कुछका अधिकारी किया है जिस्से उसने जगतकोभी रचा है ॥ वह उसके तेजका प्रकाश और उसके रूपका सादृश्य है और अपने पराक्रमी वाक्यसे सब कुछको संभालता है जब वह आप हमारे पापको निहत कर चुका ऐश्वर्यके दहिने अंचेपर बैठ गया ॥ जिन्हको वह निस्तारने आया वे जो मांस लहूकी देहमें थे इस्से उसनेभीदेह धारण किया ताकि वह मरके मरणके शक्तिवालेको यानै शैतानको नाश करे और जो जो मरणके डरसे अपनी सारी जिन्दिगी गिरिफ्तारीमें थे उन्हको उद्धार करे ॥ मङ्गल समाचारके

मनमें ईश्वर अपने लोगोंसे यह संबंध करता है ईश्वर कहता है मैं उन्हके मनमें अपनी आज्ञायोंको रख छोडुङ्गा और उन्हके अन्तरोंमें उन्हे लिखुङ्गा और मैं उनका ईश्वर होवुङ्गा और वे मेरे लोग होवेंगे॥ और वे अपने पडौसीको और अपने भाईको नहीं कहा करेंगे ईश्वरको जान क्योंकि सब मुझे जानेंगे छोटेसे बडेतक॥ क्योंकि मैं उन्हको अधर्म्मीयोंपर दया करुङ्गा और उन्हके पाप और खोटाई मैं और याद नही करुङ्गा॥ हमारे प्रधान पुरोहित खीष्ट अपने लहूसे धर्म्मस्थानमें समाया है और अपने जजमानोंके लिये अनन्त मोक्ष प्राप्तकिया है क्योंकि जो पशुयोंके लहू और राखके छिडकनेसे अपवित्र लोग देहसे पवित्र हो जांय तो खीष्टने जो परमात्माके वसीलेसे आपेको ईश्वरके आगे बिना दोष चढाया उसका लहू केता गुण ज्यादा तुम्हारे मनको जीवन्त ईश्वरकी सेवा करनेको मुर्दे कामोंसे साफ करेगा॥ जैसा मनुष्योंके लिये एक बेरी मरणा ठहरा है और उसपीछे बिचार वैसे खीष्टभी एक बेरी चढाया गया बहुतोंके पाप उठानेके लिये और जो जो उसकी बाट देखते हैं उन्हको वह दूसरी बेरी पाप रहित मोक्षको पहुंचानेको आवेगा॥ तुम्ह जानते हो कि तुम्ह बिनाशी चीजोंसे जैसी चान्दी और सोना आजाद नही किय गय लेकिन खीष्टके अनमोल लहूसे जैसे निर्दोष और बेदाग मेश बच्चेके जो जगतकी नीव डालनेसे पहिले तो ठहराया गया था पर इस अन्तके समयमें प्रकाश हुआ और उसने आप अपने देहमें क्रूशपर हमारे पापोंको धारण किया ताकि हम

पापोंकी ओडसे मरके धर्म्ममें दिन काटें ॥ उसकी मार से हमको सलामती हुई है क्योंकि खीष्ट धर्म्मी होके पा पोंके निमित्त अधर्मोंके लिये एक बरी मरा ताकि वह हमको ईश्वरके पास पहुंचावे ॥ ईश्वरका पुत्र यिशु खीष्टका लहू हमको सब पापसे पवित्र करता है जो हम कहें हमें पाप नही हम भ्रम करतें हैं और सत्य हमें नही है जो हम अपने पापोंको कबूलें वह हमारे पापों को क्षमा करनेको और हमें सब अधर्म्मीसे पवित्र करने को सच्चा और यथार्थ हैं ॥ जो कोई पाप करे ईश्वर पिताके पास हमारेएक वकील है वही यिशु खीष्ट यथार्थी और वह हमारे पापोंका प्रायश्चित्य है और केवल ह मारे नही पर सारे जगतकभी ॥ यही प्रेम है न कि हमने ईश्वरको प्रेम किया परंतु उसने हमको प्रेम किया और अपने पुत्रको हम रे पापोंका प्रायश्चित्य होनेको भेजा ॥ ईश्वरने हमको अनन्त जीवन दिया है और वह जीवन उसके पुत्रमें है जिसने पुत्रको धारण किया है उसको जीवन है और जिसने पुत्रको नही धारण किया उसको जीवन नही है ॥ यह बातें तुम्हे लिखी जाती हैं ताकि तुम्ह जानो तुम्हे अनन्त जीवन मिलना है और ताकि तुम्ह ईश्वरके पुत्रके नामसें भक्ती करो ॥ प्रभु यिशु जी दयाल आप अपने इन्ह वचनोंके साथ अपने आशी र्व्वाद दीजिये कि पढने सुनेवालोंको तुम्हारी ईश्वर ताकी और मुक्त दायक मङ्गल समाचारकी प्रतीत होवे और कि वे तुम्हारी प्रार्थना नित्य नित्य करके पापोंका मोचन और शुद्ध हृदय पावें और तुम्हारी भक्ती और डर और

प्रमसे दिन काटकर पूर्ण मोक्षको पहुंचे और तुम्हारी परम कृपासे ईश्वर सच्चिदानन्दके साक्षातकार होके नित्य आनन्दमें रहें आमिन ॥

॥ प्रभु यिशुका गुणानवाद ॥

१ प्रभु यिशु दयाल है। उसके जैसा कोई न है। वही अपनी दयासे। मेरी जानको बचावे ॥ २ । प्रभु यिशु प्रेमी है। उसके प्रेमका सम न है। उसने प्रेमसेत्यागा स्वर्ग उसने दुःखसे भोगा अपवर्ग ॥ ३ । प्रभु यिशुज्ञानी है। हमे चौकस किया है। उसने पाप और पुण्यका ज्ञान। आत्मासेती कीया दान ॥ ४ । प्रभु यिशु बल वान है। शैतानको हराया है। अब हम पाप और नरकसे। बचें उसके प्रभावसे ॥ ५ । प्रभु यिशु सच्चा है। अपना करार रखता है। उसने जो कुछ कबूला। होगा वेशक सब पूरा ॥ ६ । प्रभु यिशु ईश्वर है। करतार पालक तारक है। उसकी तारीफ दिलसे हम। गाते रहेंगे दम बदम ॥

१ कैसा हाल है दुनियाका। क्यातबक्का आदमीका। डरे कौन है खुदासे ॥ नफरत रखे गुनाहसे ॥ २ ।

ऊए सबके सब गुमराह। गुनाहसे ऊए तबाह। दिया छोड खुदाके तैं। समेट लिया पापके तैं॥ ३ । चाहे कौन खुदाकी बात। सुने कौन निजातकी बात। खीष्टके प्यारेको माने कौन। खीष्टपर विश्वास करे कौन॥ ४ । देखो खुदा आदमीको। देखो आपकी खिलक्षतको। देखो कि वह तबाह है। पापके सबब लालती है॥ ५। शुकुर आपके किया जाय। पापीपर आप रहीम है। बेटा आपका मूआ है। जिससे पापी निजात पाए॥ ६। फैलाव मङ्गल समाचार। खीष्टकी मौतका समाचार। जिस्से पापका मोचन है। दिलभी पाकसाफ होता है॥ ७। फैलाव इस अनमोल बातको। सुनाव हरेक आदमीको। ताकि वे निजात पावें। आपका शुकुर बजावें॥

१ इस देशके ऊपर दयाल हो। अै ईश्वर यिशु खीष्ट। सत्य मत तुम्हारा फैला देव। सब मनुष्योंका इष्ट॥ २ । इस देशके सब जात पापी हैं। क्या हिंदु क्या गैर दीन। न मजहब कोइभी दुरुस्त है। जल्द फैलाव आपका दीन॥ ३ । अै प्रभु यिशु रहीम हो। सब पापीको बचाव। सब लोगको आप धर्म्मात्मा देव। और प्रेमसे दिल फिराव॥

१ आव खीष्टकी स्तुति गाव। जो हमारे तारक हैं। यिहुह परमेश्वर जिस्के नाम। जो करतारपालक है॥ २ । समुंदर भूजिस्ने। आपही रच रखा

है। और चारों खूंठोकोभी जिसने। निज बलसे रचा है॥ ३ । उसीके सन्मुख आव। हाथ जोडके सिर झुकाव। उसीको किया हम सब है। हम अपने कोइभी नहीं॥ ४ । आज सुना खीष्टकी बात । आव खीष्टके अधीन होव। अै इन्द्रस्थानके सवाल जात। आव खीष्टकी शरण लेव॥ ५ । पै उसके प्रेमकी बात। जो मानो नहीं तुम्ह सब। तौ नरक आगमें दुष्टके साथ। नित्य जलोगे तुम्ह सब॥ ६ । खीष्ट क्रोधसे कहेगा। दुष्ट स्वर्गके सुखसे दूर। जिस सुखको तुम्हने तुच्छ किया। न भोगोगे अब दूर॥